6

परमेश्वर मनुष्य बना

नये नियम की पहली चार पुस्तकें (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) हमें अब तक की सबसे अद्‌भुत कहानी बताती हैं। वे हमें बताती हैं कि परमेश्वर मनुष्य कैसे बना। वे यह भी बताती हैं कि यीशु मसीह, जो परमेश्वर का पुत्र है, मनुष्य बनकर इस संसार में आया, हमारे पापों के लिए मरा, और जो उसे ग्रहण करे, उसे वह उद्धार अर्थात पापों की क्षमा और अनन्त जीवन दिलाएगा।

नया नियम इतना इतिहास की पुस्तक नहीं है जितनी इसमें उद्धार की बातें हैं, और इसका सार यह है कि कैसे परमेश्वर का पुत्र हमें बचाने की खातिर हमारे जैसा ही बन गया। इसलिए मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना केवल प्रभु के जीवन का अध्ययन ही नहीं हैं। ये तो अधिकांश मिशनरी संदेशों की तरह हैं। ये पुस्तकें हमें ''चयनात्मक इतिहास'' देकर उन विशेष घटनाओं के बारे में बताती हैं जो मनुष्य के उद्धार से सम्बन्ध रखती हैं। इस कारण, यूहन्ना 21:25 में कहता है, ''और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किये; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।'' यीशु द्वारा हमारे उद्धार के लिए की गई उन मुख्य बातों में से कुछ कौन सी हैं जो नये नियम में बताई गई हैं? यीशु मसीह के बारे में सत्य क्या है?

यीशु परमेश्वर था (है)

यीशु के बारे में जो सबसे पहला सत्य हमारे लिए स्वीकार करना आवश्यक है, वह यह है कि वह परमेश्वर था और है।

क्या उसका जन्म ही उसका आरम्भ था? नहीं। बैतलहम में हमारे प्रभु का जन्म

उसके अस्तित्व का आरम्भ नहीं है। उसका जन्म तो मनुष्य बनने के लिए उसका शारीरिक रूप धारण करना था।

''परमेश्वर'' कुछ पारिवारिक नाम के जैसा है। आपका भी पारिवारिक नाम है, जिसके द्वारा आप की पहचान आप के परिवार के अन्य सदस्यों के साथ होती है। यह वह सम्बन्ध है जो परिवार के एक-एक सदस्य को परिवार की एक इकाई के रूप में जोड़ता है। इसी प्रकार ''परमेश्वर'' एक पारिवारिक नाम है। धर्मशास्त्र में हम परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा को पाते हैं। इस परमेश्वरत्व का दूसरा सदस्य, यीशु, हमारे लिए मनुष्य बना।

एक पद जो स्पष्ट घोषणा करता है कि यीशु परमेश्वर है, वह यूहन्ना 1:1-5 है।[1] यूहन्ना ने कहा कि यीशु परमेश्वर है और सदा से ही परमेश्वर है।

> आदि में वचन[2] था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्य की ज्योति थी। और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।

इस पद में से निकलने वाले चार महान सत्यों पर हमें विचार करना चाहिए:

(1) हम देखते हैं कि यीशु कोई सृष्टि नहीं है। किसी पूर्व-अस्तित्व के बिना यीशु मनुष्य कैसे बन सकता था? किसी भी अन्य व्यक्ति के बारे में जन्म और आरम्भ में अन्तर नहीं मिलता या कहें कि उसका जीवन तब आरम्भ नहीं हुआ जब वह गर्भ में आया, परन्तु यीशु के बारे में हम यह कह सकते हैं। वह अपने जन्म के समय या मृतकों में से जी उठने के पश्चात ही परमेश्वर का पुत्र नहीं बना। वह परमेश्वर है, सर्वोच्च है, जिसका कोई आरम्भ नहीं। वह सदा से है और सदा तक रहेगा।

उसने उस महिमा की बात की, जो संसार के अस्तित्व में आने से पहले पिता के साथ थी (यूहन्ना 17:5)। उसने कहा, ''... मैं पिता की ओर से निकल आया। मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूं;...'' (यूहन्ना 16:27, 28) उसने यह भी कहा, ''क्योंकि तूने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा'' (यूहन्ना 17:24ख)। अन्य प्रत्येक व्यक्ति ने शारीरिक जन्म के द्वारा जीवन में प्रवेश किया, परन्तु यीशु के न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है (इब्रानियों 7:3)। वह पूरी तरह से सनातन है और सम्पूर्ण परमेश्वर है।

हमसे उलट, उसने पैदा होने और जीवन के अनुभव में प्रवेश होने को स्वयं चुना। पृथ्वी पर अपने जीवनकाल में, उसने अपने ईश्वरीय स्वभाव को एक ओर नहीं रखा, बल्कि उसे उसने परमेश्वर के रूप में अपनी विशेषताओं के उपयोग को स्वेच्छा से तज दिया। किसी भी समय, वह अपनी किसी भी शक्ति को वश में कर सकता था अर्थात अपनी ईश्वरीय इच्छा का उपयोग कर सकता था (फिलिप्पियों 2:6)।

(2) हम देखते हैं कि परमेश्वर ने संसार की रचना यीशु के द्वारा ही की। इस संसार का सच्चा प्रभु वही है। पहला कुरिन्थियों 8:6 कहता है: ''तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिए हैं, और एक ही प्रभु है अर्थात यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तुएं हुई, और हम भी उसी के द्वारा हैं।'' कुलुस्सियों 1:16 भी यही कहता है, ''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं।''

(3) हम देखते हैं कि यीशु जीवतों को जीवन देता है और मरे हुए लोगों को जिला सकता है (देखिए यूहन्ना 11:25)। वह जीवन का कर्त्ता है।

(4) हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि वह जीवन और मृत्यु का प्रभु है। उसने सब कुछ बनाया और वही सब वस्तुओं को सज़्भालता, जीवन देता और मृत्यु पर अधिकार रखता है।

क्या हम पृथ्वी पर अपने प्रभु की सेवकाई की हर बात को समझ सकते हैं? निस्संदेह, हम नहीं समझ सकते। मनुष्य परमेश्वर को पूरी तरह कैसे समझ सकता है? किसी सत्य पर विश्वास करने के लिए उसे समझना आवश्यक नहीं है। मुझे यह समझ नहीं आता कि परमेश्वर ने पृथ्वी को कैसे रचा होगा, परन्तु मैं मानता हूं कि इसे रचा उसी ने है। मुझे यह समझ नहीं आता कि यीशु मुर्दों में से कैसे जी उठा होगा, परन्तु मेरा विश्वास है कि वह जी उठा। इसी प्रकार, मुझे समझ नहीं आता कि यीशु मसीह, जो परमेश्वर है, मनुष्य कैसे बन सका, परन्तु मेरा विश्वास है कि वह बना।

यीशु: परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य बना

यीशु के बारे में अलग सत्य जिस पर हमें विचार करना चाहिए, वह यह है कि वह पूरी तरह मनुष्य बना। आइए इस सत्य को अपने मनों में प्रवेश करने दें: परमेश्वर

के पुत्र, यीशु को शरीर पहनाया गया! यीशु, परमेश्वर का पुत्र था, है, और हमेशा परमेश्वर का पुत्र रहेगा; परन्तु जन्म लेकर वह मनुष्य का पुत्र बना।

पौलुस ने वर्णन किया है कि कैसे यीशु ने पृथ्वी पर आने के लिए स्वर्ग को छोड़ा (फिलिप्पियों 2:5-8)। ध्यान दें कि हमारे जैसा बनने के लिए यीशु स्वर्ग से नीचे कैसे आया।

पहले, उसने स्वर्ग को छोड़ा। उसने अपने पिता की उपस्थिति का भरपूर प्रेम त्याग दिया। उसने उस स्थान को छोड़ दिया जहां कोई घृणा नहीं- ऐसा स्थान जो ईर्ष्या, डाह, और संदेह से मुक्त था! उसने स्वर्ग की मधुर संगति को छोड़ दिया- जहां कलह, झगड़ा, अथवा बहस नहीं थी। वह स्थान जहां गलतफहमी अथवा गड़बड़ी नहीं थी। उसने स्वर्ग के भरपूर साधनों को छोड़ दिया। उसने ऐसा स्थान छोड़ना प्रिय जाना जहां किसी धन की कमी नहीं थी, जहां कोई निर्धनता नहीं थी, और जहां कभी भूख या प्यास नहीं थी।

दूसरा, वह मनुष्य बना। उसके जन्म से उसका आरज़्भ नहीं हुआ, बल्कि समय के रंगमंच पर केवल मनुष्य के रूप में यह उसकी प्रस्तुति थी। यीशु अनन्तकाल और समय का मिलन था, ईश्वरत्व और मनुष्यता का सज़्पूर्ण मिश्रण, स्वर्ग और धरती के मिलने का स्थान। वह केवल पैदा होने के लिए ही नहीं, बल्कि सज़्पूर्ण मनुष्य बनने के लिए सहमत हुआ ताकि वह मर सके। जो परमेश्वर था, वह मनुष्य बन गया। वह परमेश्वर का पुत्र था परन्तु वह मनुष्य का पुत्र बन गया।[3]

मसीहियत की यह महान सच्चाई है। यदि आप इस सत्य पर विश्वास कर सकते हैं, तो आप मसीहियत के प्रत्येक सत्य पर विश्वास कर सकते हैं। हां, मसीहियत का आश्चर्यजनक सत्य यह है कि नासरत का यीशु परमश्वेर मनुष्य बना- अर्थात उसने परमेश्वरत्व की हानि के बिना मनुष्यता को पहन लिया, जिस प्रकार वह सचमुच और पूरी तरह मनुष्य था वैसे ही परमेश्वर भी था। जो कोई मसीहियत के इस भाग पर विश्वास कर लेता है, उसे इसकी शेष सच्चाइयों को मानने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

यूहन्ना ने लिखा है, ''वचन देहधारी हुआ; और ... हमारे बीच में डेरा किया'' (यूहन्ना 1:14क)। अन्य शब्दों में परमेश्वर मनुष्य बना; ईश्वर पुत्र एक यहूदी बना; सर्वशक्तिमान एक असहाय इन्सानी बालक की तरह प्रकट हुआ, जो अपने बिस्तर पर लेटने, एकटक देखने, सरकने और शोर मचाने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकता था। उसे दूध पिलाने की, कपड़े बदलने की, और अन्य बच्चों की भांति ही शिक्षा दिए जाने की आवश्यकता थी। यह कोई दृष्टि-भ्रम अथवा धोखा नहीं था;

परमेश्वर के पुत्र का बालकपन एक वास्तविकता थी। जितना अधिक आप इस पर विचार करेंगे, उतना ही अधिक आप आश्चर्यचकित होते जाएंगे। यीशु के देहधारी होने में लोगों के अविश्वास या अपर्याप्त विश्वास के कारण ही सुसमाचार के अन्य सत्यों को मानने में कठिनाई आती है। एक बार उसके देहधारी होने की वास्तविकता मान लें, तो अन्य कठिनाइयां जाती रहेंगी।[4]

तीसरा, वह मनुष्य का दास बना। वह एक राजा की तरह महल में नहीं, बल्कि एक दास की तरह निर्धनता में रहा। वह सेवा करवाने नहीं; बल्कि सेवा करने के लिए आया। वह हमें दिखाने आया कि परमेश्वर कैसा है और सच्ची इन्सानियत क्या है (मरकुस 10:45)।

चौथा, उसने अपने आप को मृत्यु के लिए प्रस्तुत किया। मृत्यु के लिए अपने आप को दिए बिना, वह सम्पूर्ण मनुष्य नहीं हो सकता था। उसने मनुष्य के साथ पूरी तरह से अपना सम्बन्ध बना लिया। उसने बद से बदतर मृत्यु, यहां तक कि क्रूस की मृत्यु के लिए अपने आप को सौंप दिया। मैं तो सोते-सोते ही मरना चाहता हूं। आप कैसे मरना चाहते हैं ? इस बात में, हम यीशु के जैसे नहीं हैं। उसने यातनापूर्ण, दर्दनाक मृत्यु के लिए- सहर्ष, स्वेच्छा से और बिना किसी दबाव के अपने आपको सौंप दिया।

वह परमेश्वर-मनुष्य बनकर हमारे मध्य रहा

यीशु के बारे में एक और सच्चाई जिस पर हमें विचार करना चाहिए, वह यह है कि वह हमारे मध्य परमेश्वर-मनुष्य बन कर रहा।

हमें आशा होगी कि परमेश्वर-मनुष्य का इस पृथ्वी पर जीवन बड़ा असाधारण होगा। परमेश्वर-मनुष्य अन्य सभी लोगों से भिन्न होगा। हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना ने पृथ्वी पर उसके जीवन को अन्य किसी भी मनुष्य से, जो कभी जीवित रहा हो, उत्तम बताया है।

यदि परमेश्वर मनुष्य बना, तो उसका जन्म विशेष होना चाहिए था। उसका जन्म ऐसा ही था: मत्ती और लूका के सुसमाचार मरियम नाम की एक कुंवारी से उसका जन्म हुआ बताते हैं। उसकी सांसारिक माता थी, परन्तु सांसारिक पिता नहीं था, क्योंकि वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया था (मत्ती 1:20)।

हमें यह भी आशा होगी कि उसका जीवन सम्पूर्ण हो, ईश्वरीय शिक्षाओं से चले

जो नाशवान मनुष्य की ओर से न हों। आश्चर्य की बात नहीं कि जैसे वह बातें करता था उस प्रकार कभी कोई नहीं बोल सका (मत्ती 7:29)। जो लोग उससे मिले और उन्होंने उसे शिक्षा देते सुना, वे उसके जीवन और संदेशों से चकित थे।

यदि वह शरीर में परमेश्वर था तो हमें आश्चर्य क्यों होना चाहिए कि मनुष्य की योग्यता से परे आश्चर्यकर्मों और अचज़ोंं के द्वारा उसने सामर्थ को प्रदर्शित किया? कहते हैं कि उसने चमत्कार सब के सामने किए, जिन्हें उसके शत्रु भी मानते थे कि वे प्रकृति के नियम के ऊपर और उसके विपरीत हैं। उसने मुर्दों को जिलाया (यूहन्ना 11:35), अन्धों को ठीक किया (मरकुस 8), और भोजन के लिए रोटी और मछलियों को कई गुणा बढ़ा दिया (यूहन्ना 6)। यह तथ्य हमारे लिए आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए कि उसमें यह सामर्थ थी। आखिर उसने सभी वस्तुएं बनाईं और उन्हें बनाए भी रखता है।

क्या हम आशा नहीं करेंगे कि उसकी मृत्यु भी संसार के इतिहास में अपने ही ढंग की हो? क्योंकि क्रूस पर परमेश्वर की मृत्यु तो सब युगों में सब से अधिक विस्मयकारी होनी चाहिए थी। सुसमाचार बताते हैं कि ऐसा ही हुआ। यीशु की मृत्यु के समय, आकाश में अन्धेरा हो गया, धरती डोल गई, मन्दिर का पर्दा फट गया, और कब्रें खुल गईं। कई भक्त लोग अपनी कब्रों में से जी उठे और यीशु के जी उठने के बाद यरूशलेम में जीवित दिखाई दिए (मत्ती 27:50-53)। जब परमेश्वर-मनुष्य मरा, तो एक विशेष घटना घटी, जिसकी योजना संसार की नींव से ही बनाई गई थी।

क्या हमें यह आशा नहीं होनी चाहिए थी कि परमेश्वर-मनुष्य के पास मृत्यु का अधिकार हो? सचमुच ही, वह मृतकों में से जी उठा। उसके जीवन के बारे में बताए गए सत्यों में सबसे स्पष्ट यही सत्य है। सुसमाचार के सभी चारों लेखकों ने उसके पुनरुत्थान का वर्णन बड़े विस्तार से किया है। उसने हमारे पापों के लिए अपने आप को दे दिया, परन्तु वह मुर्दों में से जी उठा ताकि हम जान जाएं कि वह सचमुच ही परमेश्वर था।

सारांश

फिर तो, यीशु के बारे में, तीन सत्य हैं जो हमें कभी नहीं भूलने चाहिए: वह परमेश्वर था और है, वह मनुष्य बना और हमारे मध्य परमेश्वर-मनुष्य बनकर रहा।

यीशु के बारे में ये तीन सत्य हमें दो प्रकार से उत्साहित करते हैं। पहला, ये हमें

याद दिलाते हैं कि हमारा उद्धारकर्त्ता कोई असहाय मनुष्य नहीं, अपितु परमेश्वर– सर्वशक्तिमान, अनन्त, सृष्टिकर्ता, और सब कुछ बनाए रखने वाला परमेश्वर है।

दूसरा, हम यीशु के पूर्व अस्तित्व में मनुष्य जाति के लिए उसके प्रेम की सच्चाई को देखते हैं। संसार में उसका आना और हमारे पापों के कारण उसका मारा जाना, हमारे उद्धार की एकमात्र आशा है। यीशु आकर हमें वह आशा देने का इच्छुक था। उसने अपने आप को हमारे उद्धार के लिए दे दिया, परन्तु क्या पृथ्वी के लोग उद्धार के उस संदेश को प्राप्त करेंगे और बचाए जाएंगे? क्या यीशु ने केवल इतने से उत्तर के लिए सब कुछ त्यागा था? यीशु हमारे लिए यह जोखिम उठाने का इच्छुक था। वह हमारा उद्धारकर्ता बना। हमें और कोई भी बचा नहीं सकता था। यदि वह नहीं आता, तो हमें कोई आशा न होती।

आप चींटी बनने की कल्पना कर सकते हैं? इसके लिए आपको अपने अस्तित्व की संपत्तियां जैसे कि आपकी मानवीय देह, आपकी सामर्थ और आपकी योग्यताएं इन सभी को त्यागना पड़ेगा। आपको एक चींटी की सीमाओं में रहना होगा। यीशु चींटी तो नहीं बना, परन्तु स्वर्ग की अपनी उच्च पदवी को छोड़कर फलस्तीन का एक मनुष्य बनने के लिए नीचे आना मनुष्य के चींटी बनने से कहीं बढ़कर नम्रता थी। हां, यीशु मनुष्य बना ताकि हम परमेश्वर की संतान बन जाएं।[5]

यीशु ने जो कुछ हमारे लिए किया आइए उसके लिए आनन्द मनाएं और अभी दृढ़ निश्चय कर लें कि हम उसकी आज्ञा मानेंगे और उसके पीछे चलेंगे।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 234 पर)

1. नये नियम की पहली चार पुस्तकें क्या प्रकट करती हैं?
2. क्या यीशु का जन्म उसका आरम्भ था?
3. उन चार महान सत्यों की सूची बनाएं जो यूहन्ना 1:1–5 में से मिलते हैं।
4. हमारे जैसा बनने के लिए यीशु के नीचे आने के लिए चार बातें कौन सी थीं?
5. मसीहियत के केन्द्र में ऐसा कौन सा सत्य है कि यदि आप उस पर विश्वास कर लें तो आप अन्य किसी भी सत्य पर विश्वास कर सकते हो?
6. यीशु का जन्म विशेष कैसे था?
7. यीशु के बारे में वे तीन सत्य कौन से हैं जिनको हमें कभी नहीं भूलना चाहिए?

8. यीशु का मनुष्य बनने के लिए नीचे आना किसी मनुष्य के चींटी बनने से कहीं बढ़कर कैसे था?

शब्द सहायता

देहधारी – परमेश्वर के पुत्र का मानवीय शरीर में प्रकट होना; मनुष्य के रूप में रहने के लिए यीशु का पृथ्वी पर आना।

मध्य डेरा करना – भीतर रहना, जैसे पवित्र आत्मा मसीहियों के भीतर, अर्थात उनके जीवन में रहता है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।

पूर्व अस्तित्व – जगत की सृष्टि से पूर्व अस्तित्व में होना। यह बात केवल परमेश्वरत्व (परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा) के लिए ही कही जा सकती है। मनुष्य बनने से पूर्व यीशु का अस्तित्व था। वह अनन्त है जो सदा से था; है और सदा तक रहेगा (देखिए यूहन्ना 1:1–11)।

[1]यूहन्ना अपने सुसमाचार को इतिहास के पूर्व से आरम्भ करता है। वह अनन्तकाल में परमेश्वर से आरम्भ करता है। [2]''सिकन्दरिया के फिलो को *लोगोस* के बारे में बहुत कुछ कहना है, जो कि उसकी पद्धति में परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक मध्यस्थ था, परन्तु उसने *लोगोस* के देह बनने की सम्भावना से इन्कार किया। जब यूहन्ना कहता है कि *लोगोस* देह बना तो स्पष्टतया वह फिलो से अलग प्रकार के *लोगोस* को प्रस्तुत कर रहा है। अपने *(ज्ञान)* से, फिलो *लोगोस* को मनुष्यों के मध्य रहने के योग्य नहीं दिखा सका, जो मनुष्य से काम करवा सके और उन्हें पमरेश्वर के पुत्र होने की शक्ति दे सके। समकालीन यूनानी जगत में यह एक नई बात थी।'' (डोनाल्ड गुथरी, ए शॉर्टर लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट (मसीह का संक्षिप्त जीवन) [ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: ज़ौंडरवन, 1970], 73)। [3]''परमेश्वर का मनुष्य के भीतर रहना नहीं। ऐसे तो उन्हें बहुत सारे होना चाहिए। मनुष्य का देवता बनना भी नहीं। ऐसा तो केवल मूर्तिपूजक विचारधारा में ही मिलता है; परन्तु परमेश्वर और मनुष्य दो स्वभावों का एक व्यक्तित्व में मिलना एक अनबुझी पहेली है, जो स्पष्टीकरण की सम्भावना को व्यर्थ कर देती है'' (जी. कैज़बैल मॉरगन, *द कराइसस ऑफ द क्राइस्ट* [ओल्ड टैप्पन, एन. जे.: ज्लैमिंग एच. रेवल्ल कं., 1936], 79। [4]जे. आई. पैकर, *नोइंग गॉड* (परमेश्वर को जानना, डाउनर्स ग्रोव, III; इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1973), 46। [5]''सनातन जो सब कुछ जानता है और जिसने सब कुछ रचा वह केवल मनुष्य ही नहीं अपितु (उससे पहले) एक बालक बना, और उससे पहले वह एक औरत के शरीर में (भ्रूण) बना। यदि आप इसकी ढाल चाहते हैं, तो विचार करें कि आप एक आवरणहीन शम्बूक या एक केकड़ा बनना कैसे पसन्द करेंगे'' (सी. एस. लूइस, *मियर क्रिश्चियैनिटी,* संशो. अंक.[न्यूयॉर्क: मैकमिलन पब्लिशिंग कं., 1952], 155।

7

यीशु को हम कैसे देखें?

विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को अक्सर शोध कार्य दिए जाते हैं। शोध करने में वे हमेशा खुश नहीं होते। शायद शोध के प्रति उनकी इस बेरुखी के दो कारण हैं। पहला, शोध हमेशा कड़ी मेहनत का काम होता है। किसी ने कहा है, ''मुझे पढ़ने में आनन्द नहीं आता, परन्तु यदि कोई मुझे पढ़ कर सुनाए तो अच्छा लगता है।'' बहुत से विद्यार्थी शोध करना पसन्द नहीं करते, परन्तु यदि कोई उनके लिए शोध कर दे तो उन्हें खुशी होती है। दूसरा, अधिकतर शोध कभी न खत्म होने वाला काम होता है। शोध से पता चल जाता है कि हम क्या जानते हैं और क्या नहीं कई बार जो हमें नहीं पता होता वह उससे अधिक स्पष्ट हो जाता है। हो सकता है कोई विद्यार्थी किसी शोध कार्य को यह कहकर पूरा करे, ''इस शोध कार्य को आरम्भ करने से पूर्व, मुझे इस विषय के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी। अब जबकि मैंने इस कार्य को पूरा कर लिया है, मैं जानता हूं किसी और को इस कार्य के बारे में कुछ जानकारी नहीं है!'' इस प्रकार का निष्कर्ष बहुत निराशाजनक हो सकता है।

हम सब कुछ विशेष महत्व वाले विषयों के बारे में सच्चाई जानना चाहते हैं। हम किसी निष्कर्ष पर न पहुंचने वाले, अधूरी चर्चा से सन्तुष्ट नहीं होते। यीशु मसीह के बारे में यह बात विशेष रूप से लागू होती है। हम उसके बारे में किसी के विचार या उसके बारे में अनिश्चित मतों को नहीं सुनना चाहते; हम उसके बारे में *सच्चाई* जानने के इच्छुक होते हैं। उसके बारे में हमारे गूढ़ प्रश्न सुस्पष्ट और प्रासंगिक होते हैं: यीशु कौन है ? क्या वह सचमुच परमेश्वर का पुत्र है ? वह जीवन और उद्धार के बारे में क्या कहता है ?

इस संसार में केवल बाइबल ही एकमात्र सही पुस्तक है। परमेश्वर ने हमें यह

इसलिए दी ताकि हम उसकी बातों को अच्छी तरह से समझ सकें (2 पतरस 1:3)। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम सारा जीवन यीशु के बारे में कोई निर्णय ही न लें। वह चाहता है कि हम जान लें कि यीशु कौन है और वह क्या करने के लिए पृथ्वी पर आया। वह हमें उसके बारे में सच्चाई बताना चाहता है ताकि उस सच्चाई के भरोसे और आश्वासन से हम अपने जीवनों को बचा सकें।

बाइबल हमें यीशु की एकमात्र प्रामाणिक तस्वीर देती है। यह हमें दो तरह से बताती है कि वह कौन है: पहला, हमें यह ध्यान देकर कि उसे बाइबल में क्या कहकर पुकारा गया है, पता चलता है कि वह कौन है। दूसरा, हम उसके विशेष गुणों को देखकर जानते हैं कि वह कौन है।

आइए, हम सावधानीपूर्वक देखें कि बाइबल में उसे क्या कहा गया है। यदि हमारा भरोसे का कोई व्यक्ति किसी के साथ हमारी पहचान करवाए और बताए कि वह एक प्रचारक तथा शिक्षक है, तो हमें पता चल जाता है कि वह आदमी कौन है और कैसा है। ''प्रचारक'' अथवा ''शिक्षक'' शब्द हमारे सामने उस व्यक्ति की एक अलग तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

पवित्र शास्त्र यीशु की पहचान के बारे में हमें शंका में नहीं रखता। उसके लिए विशेषकर उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिन्हें समझने में गलती नहीं हो सकती। जब हम ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं कि पवित्र शास्त्र में यीशु को क्या कहकर पुकारा गया है, तो हमें पता चल जाता है कि वह कौन है।

वह हमारा उद्धारकर्त्ता है

पहले, पवित्र शास्त्र में यीशु को ''उद्धारकर्त्ता'' कहा गया है। ''उद्धारकर्त्ता'' शब्द उसके लिए प्रयुक्त होता है जो औरों को गंभीर खतरे से बचाता है।

मत्ती में लिखित जन्म के वृत्तांत में वर्णन है कि स्वर्गदूत ने यूसुफ को जिसने यीशु का सांसारिक पिता होना था, स्वप्न में दर्शन दिया ।

स्वर्गदूत ने कहा:

> ... हे यूसुफ दाऊद की संतान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा (मत्ती 1:20, 21)।

जैसा कि आप देख सकते हैं, यीशु कोई साधारण बचाने वाला नहीं था; उसने सबसे विलक्षण उद्धारकर्त्ता कहलाना था। यदि कोई आदमी एक बच्चे को जलती हुई इमारत से बचाता है तो, हम उसे उस बच्चे को बचाने वाला कहते हैं। यदि कोई आदमी भूख से मर रहे लोगों को भोजन देता है तो उसे लोगों को बचाने वाला कहा जाता है। पवित्र शास्त्र के अनुसार, यीशु हमें हमारे पापों से बचाता है। वह हमारा आत्मिक उद्धारकर्त्ता है।

हर ज़िम्मेदार व्यक्ति को अपनी सबसे बड़ी समस्या के रूप में पाप के दोष का सामना करना ही पड़ता है। किसी ने कहा है कि यदि हम अपने गले में टेप रिकॉर्डर बांध लें और अड़तालीस घण्टों के समय में जो भी शब्द हमारे मुंह से निकलें उन्हें रिकॉर्ड कर लें, तो हम आसानी से जान सकते हैं कि हम पापी हैं। यदि हम बैठकर हर एक शब्द को ध्यान से सुनें, हर एक वाक्य के प्रयोजन पर विचार करें, अपने बोलने के लहज़े पर ध्यान दें, तो निश्चय ही हम निष्कर्ष निकालेंगे कि हमने हमेशा वह नहीं कहा जो हमें कहना चाहिए था। इसी प्रकार, हम अपने जीवन के अड़तालीस घण्टों की फिल्म भी बना सकते हैं। अपने हर कार्य और व्यवहार की जांच करने पर, हमें आसानी से पता चल सकता है कि हम पापी हैं। जब हम अक्सर वह करते हैं जो हमें नहीं करना चाहिए और जो नहीं करना चाहिए वही करते हैं तो सच्चाई हमें डांटती है। यह बताने के लिए कि हम पापी हैं, हमें बाइबल की भी आवश्यकता नहीं है। जब हम अपनी बातों और अपने कामों को निकट से देखते हैं तो, हमें पता चलता है कि हम पापी हैं। फिर भी, बाइबल हमारे बारे में इस सच्चाई की घोषणा साफ-साफ करती है। पौलुस ने मसीहियों को याद दिलाया, ''... 'कि कोई भी धर्मी नहीं, एक भी नहीं' '' (रोमियों 3:10)।

हमारे पाप के बारे में क्या किया जाए? हम अपने आप को क्षमा नहीं दिला सकते। हमारा पाप केवल औरों के विरुद्ध ही नहीं होता, बल्कि यह परमेश्वर के विरुद्ध भी है। कौन है जो हमारी अति महत्वपूर्ण आवश्यकता में हमारी सहायता कर सकता हो? मनोविज्ञान हमें क्षमा नहीं कर सकता। सकारात्मक सोच ऐसा नहीं कर सकती। यह ढोंग करना कि हम पापी नहीं हैं, हमें बचा नहीं सकता। क्या किया जा सकता है? इस निराशा की स्थिति में हमारे लिए परमेश्वर का उत्तर यीशु है। यूसुफ को बताया गया था कि उस काम के कारण जो यीशु ने पृथ्वी पर पूरा करना था उस का नाम स्वर्ग में ही रखा गया था। उसके जन्म के समय, स्वर्गदूत ने फलस्तीन की एक पहाड़ी पर चरवाहों में यह घोषणा की, ''कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्त्ता

जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है'' (लूका 2:11)। यीशु का इस पृथ्वी पर आने का मुख्य उद्देश्य हमें हमारे पापों से बचाना था (1 कुरिन्थियों 15:3)।

नेपोलियन की सेना के एक सिपाही की मर्मस्पर्शी कहानी है। वह एक बहादुर, निष्ठावान सिपाही था। युद्ध के दौरान, वह अपने तम्बू में अपनी ज़िम्मेदारियों और परिवार की चिन्ताओं में खो गया। उसने एक कागज़ पर अपना सारा कर्ज़ और जितना धन परिवार को चलाने के लिए चाहिए था, सब लिख दिया। यह अहसास होने पर कि इतना कर्ज़ उतारने और परिवार का खर्च चलाने के लिए उसके पास धन नहीं है, वह निराशा में डूब गया। उदास चित्त, जिस कागज़ पर उसने अपनी वित्तीय देनदारियों का हिसाब किया था उसके नीचे एक ओर लिख दिया, ''इतना कर्ज़ कौन चुकाएगा?'' हार मान कर, उसने सिर अपनी बांह पर रखा और सो गया। सिपाही को ध्यान न रहा, तभी नेपोलियन अपने सिपाहियों की स्थिति देखने और हौसला बढ़ाने के लिए उनके कैम्प में आया। जब वह इस सिपाही के तम्बू के पास से गुज़रा, तो उसने निरीक्षण के लिए उसे पुकारा, परन्तु तम्बू के अन्दर से कोई आवाज़ न आई। उसने आगे बढ़कर अन्दर झांका। उसने सो रहे सिपाही को और कागज़ के नीचे एक तरफ भावात्मक प्रश्न लिखा हुआ देखा। नेपोलियन ने झुककर, उसका पैन उठाया, और उस प्रश्न के नीचे लिख दिया, ''मैं चुकाऊंगा,'' और उस पर हस्ताक्षर कर दिए, ''नेपोलियन।''

जब हम अपने पाप के कर्ज़ और उद्धार के लिए सख़्त ज़रूरत को देखते हैं, तो हम भी चिल्लाते हैं, ''इतने सारे कर्ज़ का दाम कौन चुकाएगा?'' जो नेपोलियन से भी बड़ा है, उसने उत्तर दिया है, ''मैं चुकाऊंगा।'' यीशु, जगत के उद्धारकर्त्ता ने, क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, हमारे सम्पूर्ण उद्धार की पेशकश की है।

बाइबल स्पष्ट बताती है कि यीशु ही हमारा अकेला और एकमात्र उद्धारकर्त्ता है। पतरस ने कहा, ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों के काम 4:12)। यदि आप अपने पापों से उद्धार पाना चाहते हो ताकि आप स्वीकार योग्य होकर परमेश्वर के सामने खड़े हो सको, तो आपके लिए मसीह के पास आना आवश्यक है (यूहन्ना 14:6; मरकुस 16:16)। पवित्र बाइबल के अनुसार वह हमारा उद्धारकर्त्ता है।

मसीह के रूप में

दूसरा, यीशु को ''ख्रीष्ट अथवा ख्रीस्तुस'' कहा जाता है, जिसका अर्थ है

''अभिषिक्त''। यूनानी भाषा का ''ख्रीस्तुस'' शब्द इब्रानी भाषा के ''मसीहा'' के समान ही है। नया नियम यीशु की पहचान करवाते हुए बताता है कि यह वही परमेश्वर का चुना हुआ है, जिसका वायदा किया गया था।

भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणियां की थीं कि परमेश्वर का एक विशेष सेवक आने वाला था:

> क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती जाएगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा (यशायाह 9:6, 7)।

मीका ने भविष्यवाणी की थी, ''हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हज़ारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादि काल से होता आया है'' (मीका 5:2)। नया नियम प्रमाणित करता है कि जिसके आने की भविष्यवाणियां की गई थीं, वह यीशु ही था और वह आ चुका है।

पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के अन्त की ओर, यीशु अपने चेलों के साथ कैसरिया फिलिप्पी को जा रहा था। रास्ते में यीशु ने अपने चेलों से पूछा, ''कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?'' उसके चेलों ने उत्तर दिया, ''कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यवक्ताओं में से कोई एक कहते हैं'' (मत्ती 16:13, 14)। उनके उत्तर के बाद, फिर यीशु ने पूछा, ''परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?'' पतरस ने उत्तर देकर कहा, ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (मत्ती 16:15, 16)। यीशु ने उस उत्तर के लिए पतरस की प्रशंसा की, उसने कहा ''हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है'' (मत्ती 16:17)। अन्य शब्दों में, यीशु कह रहा था, ''पतरस तू इस निष्कर्ष पर मनुष्य के कहने के अनुसार नहीं पहुंचा। तुझे यह उत्तर स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से मिला है।'' यह ईश्वरीय

प्रकाशन था, किसी मनुष्य का अनुमान नहीं था।

नया नियम यीशु के बारे में जो कुछ बताता है उस पर विचार कीजिए। जब यह उसे ''ख्रीस्तुस'' कहता है तो यह यही बताता है कि वह परमेश्वर का विशेष चुना हुआ है। वह किसी का अग्रदूत नहीं; बल्कि स्वयं मसीह है। उसने चुने हुए के आने के बारे में भविष्यवाणी नहीं की; वह तो स्वयं उस चुने हुए के बारे में समस्त भविष्यवाणी की पूर्णता था। वह केवल उस चुने हुए के साथ जुड़ा हुआ नहीं बल्कि स्वयं चुना हुआ था।

परमेश्वर के पुत्र के रूप में

तीसरा, नये नियम में यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में दिखाया गया है, जो कि परमेश्वरत्व का दूसरा सदस्य है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को परमेश्वर ने पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई के लिए मार्ग तैयार करने के लिए चुना था। उसने इसे मन फिराव का प्रचार करने और पापों की क्षमा के लिए मनफिराव का बपतिस्मा देकर पूरा किया (मरकुस 1:4)। जिन लोगों ने उसके प्रचार का उत्तर दिया, यूहन्ना ने उन्हें आने वाले मसीहा के बारे में बताया। मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर लोग मसीह के आने पर उसे ग्रहण करने की प्रतीक्षा कर रहे थे (प्रेरितों 19:4)। जब यूहन्ना ने परमेश्वर की ओर से दिया गया प्रचार का काम पूरा किया तो, सारे यहूदिया और यरदन नदी के आस-पास के सारे देश के लोग उसके पास गए और उससे बपतिस्मा लिया (मत्ती 3:5)। एक दिन जब यूहन्ना लोगों को नदी में बपतिस्मा दे रहा था, तो यीशु भी यरदन नदी के किनारे आ गया। यूहन्ना को उस समय तक निश्चित रूप से यह पता नहीं था कि यीशु ही मसीह था (यूहन्ना 1:29-31)। परन्तु वह यह जानता था कि यीशु उससे बड़ा है। इस कारण उसने यीशु के आग्रह का यह कहकर उत्तर दिया कि, ''मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?'' यीशु ने कहा, ''अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है'' (मत्ती 3:15)। यूहन्ना परमेश्वर का काम कर रहा था। वह परमेश्वर का भेजा हुआ था। यीशु जब इस पृथ्वी पर था तो वह पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहता था। इस कारण उसने आज्ञाकारी होकर यूहन्ना से बपतिस्मा लिया- इसलिए नहीं कि उसने पाप किए थे जिनके लिए उसे क्षमा की आवश्यकता हो, या उसे मन

फिराव की आवश्यकता हो, या उसे मसीहा के आने पर उसे पाने की आवश्यकता हो। वह स्वयं मसीह था, परन्तु उसने परमेश्वर की इच्छा और समस्त धार्मिकता को पूरा करने के लिए यूहन्ना का बपतिस्मा लिया।

डुबोने के बाद जैसे ही यूहन्ना ने यीशु को पानी में से बाहर निकाला, परमेश्वर का आत्मा कबूतर की नाईं उस पर उतरा। जब यूहन्ना ने यह चमत्कारी घटना देखी, तो वह जान गया कि यीशु ही वह मसीह था (यूहन्ना 1:32-34)। फिर आकाश से एक आवाज़ आई, जो परमेश्वर की आवाज़ थी- वह कह रहा था, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं'' (मत्ती 3:17)। नये नियम के इन पदों में, दी गई परमेश्वर की गवाही में समाविष्ट है कि यीशु उसका पुत्र है।

यूहन्ना प्रेरित ने कहा कि हमें तीन गवाहियां दी गई हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उसने कहा, ''और गवाही देने वाले तीन हैं; आत्मा, और पानी, और लोहू; और तीनों एक ही बात पर सहमत हैं'' (1 यूहन्ना 5:7, 8)। यीशु के बपतिस्मे के बाद उस पर कबूतर की नाईं उतरकर पवित्र आत्मा गवाही देता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। सुसमाचारों में अन्य स्थानों पर भी पवित्र आत्मा ने यही गवाही दी। ''पानी'' निश्चय ही यीशु के बपतिस्मे का प्रतीक है, जब पिता ने आकाश से कहा कि यीशु उसका पुत्र है। ''लोहू'' जिसकी बात यूहन्ना ने की वह यीशु की मृत्यु का प्रतीक होगा। यीशु के क्रूसारोहण के समय हुई चमत्कारी घटनाओं ने यीशु के स्वर्ग से होने की गवाही दी। यूहन्ना ने कहा, ''जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो उससे बढ़कर है; और परमेश्वर की गवाही यह है, कि उस ने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है'' (1 यूहन्ना 5:9)। यदि तीन भद्र पुरुष मिलकर किसी सच्चाई की गवाही दें, तो हम उनकी गवाही को मान लेते हैं और ऐसा ही किसी भी देश के न्यायालय में भी होगा। फिर हमें कितना अधिक परमेश्वर की गवाही को मान लेना चाहिए! उसने अपने पुत्र के बारे में गवाही दी है, यह आत्मा (उसके बपतिस्मे के समय कबूतर के रूप में), पानी (जब उसके बपतिस्मे पर पिता की आवाज़ सुनी गई), और लहू की (जब उसकी मृत्यु के समय आश्चर्यकर्म हुए) गवाही है।

यीशु कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर के लिए पवित्र शास्त्र कोई शंका नहीं रहने देता। नया नियम स्पष्ट बताता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। यीशु की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यीशु की उपेक्षा करना परमेश्वर की उपेक्षा करना है।

प्रभु के रूप में

चौथा, नया नियम यीशु को ''प्रभु'' बताता है। वह हमारा सर्वोच्च शासक है, जिसे परमेश्वर की ओर से सम्पूर्ण अधिकार मिला है।

मृतकों में से जी उठने के पश्चात यीशु ने चेलों को दर्शन देकर यह प्रकट किया कि वह सचमुच ही मुर्दों में से जी उठा है। यीशु ने अपने चेलों को बताया:

> कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:18-20)।

यीशु के पिता के पास ऊपर उठाए जाने के दस दिन बाद, प्रेरितों पर पवित्र आत्मा बहाया गया। उस दिन, जो कि पिन्तेकुस्त का दिन था, वहां जमा हुई विशाल भीड़ में पतरस ने बात की। उसने वह प्रमाण दिया जो यह साबित करता है कि यीशु ही मसीह है। जब वह अपने प्रवचन के चर्म पर पहुंचा तो उसने अपने सुनने वालों को निष्कर्ष निकालने के लिए कहा कि परमेश्वर ने यीशु को ''प्रभु भी ठहराया और मसीह भी ठहराया'' (प्रेरितों के काम 2:36)। यह समझाने के बाद कि यीशु कैसे विनम्र होकर मनुष्य बना और मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा, पौलुस ने लिखा,

> इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

यीशु के बारे में पौलुस ने यह भी लिखा, ''और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है और उसकी परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है'' (इफिसियों 1:22-23)।

नये नियम के अनुसार यीशु का हमारा प्रभु होने का क्या अर्थ है? व्यावहारिक

तौर पर इसका अर्थ है कि हम उसके आगे समर्पित होते हैं। यीशु ने कहा, ''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो? (लूका 6:46)। उसने यह भी कहा, ''जो कोई मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है'' (मत्ती 7:21)। क्या आप मसीह की शिक्षाओं के प्रति समर्पित होना चाहेंगे? दूसरा, इसका अर्थ है कि हमें अपने जीवनों में भी मसीह को प्राथमिकता देनी आवश्यक है। हमारा पूरी निष्ठा और प्रेम से उसको समर्पित होना आवश्यक है। स्वर्ग की ओर से प्रभु के रूप में केवल उसी को महिमा मिली है, हमारे दिलों पर भी उसी प्रभु को विराजमान होना चाहिए।

किसी ने कहा है, ''हर एक हृदय में, एक क्रूस है और एक सिंहासन है। यदि मैं स्वयं को उस सिंहासन पर बिठा दूं तो मुझे मसीह को क्रूस पर रखना पड़ेगा। यदि मैं मसीह को सिंहासन पर बिठाऊं तो स्वयं को मुझे क्रूस पर बिठाना होगा।'' यदि आप यीशु के होने को ''हां'' कहते हैं, तो आपको अपनी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को ''नहीं'' कहना होगा। कोई भी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता; आप एक से प्रेम रखेंगे और दूसरे से वैर (मत्ती 6:24)।

नया नियम कहता है कि यीशु प्रभु है। परमेश्वर ने सब कुछ उसके कदमों के नीचे कर दिया है। वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।

सारांश

फिर, यीशु कौन है? संसार की एकमात्र पूरी तरह से सही पुस्तक बाइबल कहती है कि वह हमारा उद्धारकर्त्ता, मसीह, परमेश्वर का चुना हुआ, परमेश्वर का पुत्र और प्रभु है। उसके बारे में यह सच्चाई है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह कौन है, आपको और खोज करने की आवश्यकता नहीं है। बाइबल हमें उसके बारे में पूरी सच्चाई बताती है।

संसार में यीशु के आने से कैलेण्डर ईस्वी पूर्व और ईस्वी सन में बंट गया। मत्ती 25:31-46 कहता है कि वह उद्धार पाए हुए लोगों को अधर्मियों से अलग करके मनुष्यजाति को अलग करेगा। पीलातुस ने सोचा था कि यीशु उसके सामने न्याय के लिए खड़ा है, परन्तु सच्चाई यह थी कि पीलातुस यीशु के सामने खड़ा था। संसार के अंत के दिन, उद्धार पाए हुए लोग यीशु के सिंहासन के दाईं ओर होंगे, जबकि नाश

होने वाले लोग उसके सिंहासन के बाईं ओर खड़े होंगे। यीशु को दिए आपके उत्तर से तय होगा कि आप उसके दाहिने हाथ खड़े होंगे या बांयें। उसके दाहिने आप केवल उद्धार पाने के बाद ही खड़े हो सकते हैं। उसने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। आप या तो यीशु के द्वारा परमेश्वर के पास आओगे या सदा के लिए नाश हो जाओगे। वह इसलिए आया कि हमें जीवन मिले (यूहन्ना 10:10); उसके बिना तो हम अनन्त मृत्यु में रहते हैं।

यीशु निमन्त्रण देता है कि हम उद्धार के लिए उसके पास आएं। अन्य धर्मों के अगुवे आपको निमन्त्रण देते हैं कि आप उनकी रीतियों को अथवा उनकी शिक्षाओं को मानें। केवल यीशु, परमेश्वर का पुत्र आपको अपने पास आने का निमन्त्रण दे सकता है। उसने कहा, ''हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा'' (मत्ती 11:28)।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 235 पर)

1. शब्द ''उद्धारकर्त्ता'' किसके लिए प्रयुक्त किया जाता है?
2. यीशु कैसे सबसे अलग उद्धारकर्त्ता है?
3. ''ख्रीष्ट अथवा ख्रीस्तुस'' का क्या अर्थ है?
4. हमें कैसे मालूम है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?
5. 1 यूहन्ना 5:7, 8 में आत्मा, पानी, और लहू किसे कहा गया है?
6. प्रेरितों 2 अध्याय में पतरस ने अपने सुनने वालों को यीशु के बारे में क्या निष्कर्ष निकालने को कहा?
7. व्यावहारिक तौर पर हमारे लिए यीशु के प्रभु होने का क्या अर्थ है?

शब्द सहायता

दाऊद का नगर - बैतलहम।

क्रूसारोहण - क्रूस पर लटकाकर मृत्यु; मृत्यु देने का रोमी ढंग। यद्यपि यीशु, निर्दोष था, परन्तु हमारे पापों के कारण उसे क्रूस पर लटकाया गया।

राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु – यह हवाला यीशु और उसकी महानता के बारे में है। वह अन्य सभी से ऊपर है।

पिन्तेकुस्त (पिन्तेकुस्त का दिन) – यहूदियों का अठवारों का पर्व, इसे कटनी का पर्व भी कहा जाता था; इस दिन कलीसिया की स्थापना हुई (प्रेरितों के काम 2)।

समर्पण – परमेश्वर और उसके वचन की आज्ञाकारिता।